UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 6.125 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 13, No. 10 **Year - 13** **October, 2022**

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

अनुक्रमणिका

❧	समकालीन प्रवृत्तियां एवं प्राचीन भारतीय मूल्य **डॉ0 विजय कुमार वर्मा**	1-4
❧	समसामयिक संदर्भों को रेखांकित करता 'कुमार अम्बुज' का कविता संग्रह ''उपशीर्षक'' **डॉ0 अजय कुमार**	5-9
❧	भगवान बुद्ध और नई शिक्षा नीति 2020 **डॉ0 चन्द्र शेखर**	10-12
❧	नारी विमर्श नारी विजय नहीं है **नियति अग्रवाल एवं डॉ0 गिरजा शंकर गौतम**	13-16
❧	स्त्री आत्मकथा में स्त्री चेतना के विविध आयाम **डॉ0 सुनीता जैसल**	17-21
❧	संस्कृत वाङ्मय में वर्णित नाट्यशास्त्र की उपयोगिता **सुशीला**	22-26
❧	पञ्चमभावस्थग्रहाणां फलविवेचनम् **रंजीत दूबे**	27-32
❧	महाकवि माघ का वैदुष्य **राम लाल विश्वकर्मा**	33-40
❧	Effect of the Awareness of Human Rights on the Awareness of Women Rights and Child Rights of Students of Teacher Education **Ajay Kumar Singh & Dr. Shailendra Singh**	41-47
❧	J.P. and His Relevance Today **Alok Ranjan**	48-50

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 6.125
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 13, No. 10, October, 2022 ISSN : 0976-6650

भगवान बुध्द और नई शिक्षा नीति 2020

डॉ. चन्द्र शेखर
सहायक आचार्य, केंद्रीय वि.वि. हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला

एक अच्छे राष्ट्र की यह पहचान होती हे कि वह आर्थिक क्षेत्र में पारंगत व सांस्कृतिक संरक्षण में विशेष रुप से व्यवस्थित हो। यदि राष्ट्र का आधार मजबूत बनाना हो तो आने वाली पीढ़ियों को स्वत्व का और स्वाभिमान का संस्कार देना होगा।[1] वैश्विक शिक्षा किसी भी देश की महत्वपूर्ण संभावना होती है। यह तथ्य भी सत्य है कि देश का भविष्य बच्चों की शिक्षा पर निर्भर होता है। 2030 ई. का जो एजेंडा निर्धारित किया गया है उसके अनुसार लक्ष्य 04 में बताया गया है कि सभी लोगों के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना चाहिए। देश में अनुसंधान के माध्यम से संसाधनों की कमी को दूर किया जायेगा। पढ़े–लिखे छात्र दुनिया की अर्थव्यवस्था को संभालने में सफल सिध्द होंगे। इस उद्देश्य में सफल होने के लिए छात्रों को गंभीर रुप से सोचने, कुछ बनाने, अपने आपको उसके अनुरुप ढालना पड़ेगा। इस प्रकार 2040 ई0 तक सभी भारतीय बच्चों की विश्वस्तरीय शिक्षा प्राप्त हो सकेगी। जो भी लक्ष्य 21 सदी में निर्धारित किये गये हैं शिक्षकों को ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। मिलिन्द पण्ह में बौध्द शिक्षा के पाठ्य विषय का संकेत मिलता है।[2] इस प्रकार हम देखते हैं कि यह प्रेरक शिक्षा नीति भगवान बुध्द के विचारों से मिलती-जुलती है। जिसकी कल्पना भगवान बुध्द ने पहले ही की थी। शिक्षा के मुख्य पहलुओं जैसे सामाजिक, नैतिक और भावात्मक विकास को बढ़ावा देना चाहिए। भारतीय परम्परा के अनुसार मनुष्य सूचना, ज्ञान और सत्य चाहता है।

शिक्षा राष्ट्रीय प्रगति को आगे बढ़ाने, एक अच्छा समुदाय बनाने, किसी कार्य की वास्तविकता को सिध्द करने के लिए आवश्यक होती है। प्राचीन भारत की शिक्षा एक विशिष्ट उद्देश्य से संचालित थी। यह उद्देश्य था मानव व्यक्तित्व का उच्चतम विकास। इस विकास के दो पक्ष थे एक लौकिक तथा दूसरा पारलौकिक। पहले का लक्ष्य मानव जीवन के समस्त भौतिक सम्बन्धों के सम्यक ज्ञान तथा व्यवहार से था, दूसरे का लक्ष्य परम ज्ञान की उपलब्धि था।[3] उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा एक महत्वपूर्ण प्रभावी दृष्टिकोण है। इससे हमारे देश के विशाल कौशल और संसाधनों को विकसित किया जा सकता है। कुछ ही समय में भारतीय युवाओं की दुनिया में सबसे ज्यादा संख्या होगी। 2030 ई0 तक वैश्विक शिक्षा विकास रणनीति का उद्देश्य सतत् विकास के लिए 2030 एजेंडे के लक्ष्य-4 में बताए गये समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना है। जिसे समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना है। जिसे भारत द्वारा 2015 में अपनाया गया था। आने वाले समय में भारत एक विकसित देश और दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगा तब मानविकी और कला की बढ़ती आवश्यकता बढ़ती जायेगी। बच्चों को सोचने और सीखने की ओर बढ़ना चाहिए। शिक्षा को अधिक व्यापक, एकीकृत, खोज उन्मुख, पूछताछ, चर्चा आधारित होना चाहिए। जैसे भगवान बुध्द जब अपने संघ में लोगों को शामिल कर रहे थे उस समय न केवल कानून व्यवस्था की बल्कि शिक्षित-दीक्षित करते समय माध्यमिक मार्ग भी खोज लिया था। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए विज्ञान और गणित के साथ-साथ कला, खेल, शिल्प, भाषा, साहित्य, स्वास्थ्य, संस्कृति की भी शिक्षा देनी चाहिए। क्योंकि भाषा साहित्य, धर्म, दर्शन, सामाजिक आचार-विचार आज भी उतने ही मूल्यवान बने हुए हैं।[4] भगवान बुध्द स्वयं समानता, गुणवत्ता और बदलाव की चर्चा करते हैं। 2040 ई0 तक भारत को विश्व स्तरीय शिक्षा प्रणाली विकसित करनी चाहिए। जिससे उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा समान रुप से सभी तक पहुँच सके। शिक्षा केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं जैसे साक्षरता और संख्यात्मक ही नहीं बल्कि सामाजिक, नैतिक और वैचारिक क्षमताओं और स्वभाव को भी विकसित करना चाहिए। ज्ञान, शील, प्रज्ञा सत्य की खोज को लंबे समय से भारतीय विचार और दर्शन में अन्तिम मानवीय उद्देश्य के रुप में देखा गया है।[5] शिक्षा का उद्देश्य केवल स्कूली शिक्षा ही नहीं बल्कि स्वयं को पूरी तरह से महसूस करना और मुक्त करना था। जैसे तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, बल्लभी विश्वविद्यालयों ने प्राचीन भारत के उच्चतम मानकों को स्थापित किया। चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भगवान बुध्द, भास्कराचार्य, चाणक्य और अन्य शामिल हैं।[6] पाणिनी, पतंजलि, नागार्जुन, मैत्रेयी, गार्गी और अन्य लोगों ने भी योगदान दिया। गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, धातु विज्ञान,

शल्यचिकित्सा, वास्तुकला, योग आदि क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति का वर्चस्व रहा। इन योगदानों को भविष्य के लिए संरक्षित किया जाना चाहिए। शिक्षकों को सभी चीजों से अवगत होना चाहिए क्योंकि वही अगली पीढ़ी को तैयार करते हैं। शैक्षिक प्रणाली का लक्ष्य सभ्य नागरिकों का उत्पादन करना, सोचने में सक्षम, तर्कसंगत रुप से करुणा (बुध्द का नैतिक विचार) और सहानुभूति, दृढ़ता और लचीलापन अच्छी नींव की कल्पना कर सकते हैं। बहुभाषावाद भाषा की शक्ति को बढ़ावा देना है। सहयोग, सहकार्य, लचीलापन जीवनकौशल के उदाहरण हैं। शिक्षा के सभी चरणों में पाठ्यचर्चा सामंजस्य, प्रारम्भिक देखभाल से लेकर उच्च माध्यमिक शिक्षा तक स्कूली शिक्षा, शिक्षण प्रक्रिया के मूल के रुप में शिक्षकों और अध्यापन के लिए भर्ती, काम के माहौल और सेवा की शर्तें ईमानदारी, पारदर्शिता और संसाधन दक्षता सुनिश्चित करने के लिए सरल लेकिन प्रभावी शैक्षिक प्रणाली की दक्षता का सार्वजनिक प्रदर्शन, नवोन्मेष को बढ़ावा देते हुए अनुसंधान को बढ़ावा देती है।

भगवान बुध्द इस बात का समर्थन करते हैं कि शिक्षा तो एक सार्वजनिक सेवा भावना है। अच्छी शिक्षा हेतु बच्चों के अधिकार को मौलिक अधिकार मानना चाहिए। इसी के साथ-साथ सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में विषय निवेष, निजी और सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देना और सुविधायें प्रदान करना है। इस नीति का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति को भारतीय संस्कृति में स्थापित एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना करना है जो सभी को अच्छी शिक्षा देकर समाज में परिवर्तन का योगदान करे। इससे शिक्षार्थियों के विचार, आत्मा, बुध्दि और कर्मों में भी भारतीय होने का गर्व होना चाहिए।

स्कूल शिक्षा

- 2030 ई. तक स्कूली शिक्षा में 100 प्रतिशत सकल नामांकन के साथ पूर्व स्कूली से माध्यमिक स्तर तक शिक्षा का सार्वभौमीकरण।
- एक खुली स्कूल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से स्कूली शिक्षा से बाहर के 2 करोड़ बच्चों को मुख्य धारा में वापस लाना।
- कक्षा 10 और 12 की बोर्ड परीक्षाओं की आसानी के लिए कंठस्थ तथ्यों के बदले मुख्य दक्षताओं पर विशेष बल दिया गया है। सभी छात्रों को दो बार परीक्षा देने की अनुमति दी गयी है।
- व्यवसायिक शिक्षा कक्षा 6 से इंटर्नशिप के साथ शुरु होगी।
- कम से कम कक्षा 5 तक को मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा में पढ़ना, साथ ही किसी भी छात्र पर कोई भी भाषा थोपी नहीं जायेगी।

उच्च शिक्षा

- उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 2035 तक 35% तक बढ़ाया जायेगा। साथ ही उच्चशिक्षा में 3.5 करोड़ सीटें जोड़ी जायेंगी। उच्चशिक्षा में वर्तमान सकल नामांकन अनुपात 26.3% है।
- एक लचीले पाठ्यक्रम के साथ समग्र स्नातक शिक्षा 3 या 4 साल की हो सकती है। जिसमें इस अवधि के भीतर कई निकास विकल्प और उपयुक्त प्रमाणन हो।
- एम.फिल. पाठ्यक्रम बंद कर दिये जायेंगे और स्नातक, स्नात्कोत्तर और पी.एचडी. स्तर के सभी पाठ्यक्रम अब अंत: विषय होंगे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भविष्य में शिक्षण और उसके महत्व का मूल्यांकन भगवान बुध्द के विचारों को महत्व प्रदान करता है। प्राचीन बौध्द शिक्षा से समाज में बहुत सारे क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। बौध्द धर्म ने सबसे पहले शिक्षा का दरवाजा खोला। भगवान बुध्द के समस्त उपदेशों के सार तीन शिक्षाएं हैं- अधिशिक्षा, अधिसमाधि शिक्षा एवं अभिप्रज्ञा शिज्ञा। त्रिपिटक के सारे तत्व इन्हीं तीन शिक्षाओं में साक्षात् (सीधे) या परम्परया समाविष्ट हो जाते हैं।[7] जिसमें अनुशासन, ध्यान और ज्ञान मूल हैं। इस धर्म में मूल शिक्षा करुणा से भरी हुई है। अच्छी तरह से ध्यान लगाकर लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

नई शिक्षा नीति शिक्षा के प्रति अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ओर एक प्रगतिशील बदलाव है। यह बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ सामाजिक और शारीरिक जागरुकता को पूरा करने में मदद करेगी। यह नई संरचना भारत को विश्व के अन्य देशों के बराबर लाने में सहायक रहेगी।

स्रोत -

1. डोगरा, इन्द्र सिंह, आर्य भारत, पृष्ठ 12, (2021), विलासपुर, हिमाचल प्रदेश।
2. मिलिन्द पण्ह - 1-22-6
3. तोमर, लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पध्दति, पृष्ठ 7, (2022) सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. श्रीवास्तव, के.सी., भारत की संस्कृति तथा कला, पृष्ठ 4, (1993), यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद।
5. उपर्युक्त, पृष्ठ 196
6. झा एण्ड श्रीमाली, प्राचीन भारत का इतिहास, पृष्ठ 321,331 (2001) हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
7. दलाई लामा, संपादक प्रो0 रामशंकर त्रिपाठी, बौध्द सिधांत सार, पृष्ठ 25,26, (2002) केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, वाराणसी
8. बापट, पी.वी. बौध्द धर्म के 2500 वर्ष
9. नयी शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार
10. Mehrotra, Dheeraj, translated, NEP 2020 at a glance for educators